शुभदिवस !!!! 1:05 pm

आज हम महाकवि भारवि कृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का काव्यशैली की दृष्टि से समीक्षात्मक विवेचन करेंगे। 1:06 pm

महाकवि भारवि (छठी शताब्दी) संस्कृत के महान् कवि हैं। महाकाव्य की दृष्टि से विचार करने पर किरातार्जुनीयम् शास्त्रीय नियमों पर लिखा हुआ सफल महाकाव्य सिद्ध होता है । महाकाव्य की रचना अनेक सर्गो में की जाती है। किरातार्जुनीयम् में अट्ठारह सर्ग हैं। इसकी कथा इतिहास प्रसिद्ध महाभारत की कथा है। काव्य के नायक अर्जुन हैं। किरातार्जुनीयम् महाकाव्य भारवि की महान् रचना है। इसे एक उत्कृष्ट श्रेणी की काव्यरचना माना जाता है। इनका काल छठी-सातवीं शताब्दि बताया जाता है। यह काव्य किरातरूपधारी शिव एवं पांडुपुत्र अर्जुन के बीच के धनुर्युद्ध तथा वाद-वार्तालाप पर केंद्रित है। महाभारत के वन पर्व पर आधारित इस महाकाव्य में अट्ठारह सर्ग हैं। भारवि सम्भवतः दक्षिण भारत के कहीं जन्मे थे। उनका रचनाकाल पश्चिमी गंग राजवंश के राजा दुर्विनीत तथा पल्लव राजवंश के राजा सिंहविष्णु के शासनकाल के समय का है। 1:12 pm

कवि ने बड़े से बड़े अर्थ को थोड़े से शब्दों में प्रकट कर अपनी काव्य-कुशलता का परिचय दिया है। कोमल भावों का प्रदर्शन भी कुशलतापूर्वक किया गया है। इसकी भाषा उदात्त एवं हृदय भावों को प्रकट करने वाली है। प्रकृति के दृश्यों का वर्णन भी अत्यन्त मनोहारी है। भारवि ने केवल एक अक्षर 'न' वाला श्लोक लिखकर अपनी काव्य चातुरी का परिचय दिया है।

सफल महाकाव्य सिद्ध होता है। महाकाव्य की रचना अनेक सर्गों में की जाती है। किरातार्जुनीयम् में अट्ठारह सर्ग हैं। इसकी कथा इतिहास प्रसिद्ध महाभारत की कथा है। काव्य के नायक अर्जुन हैं। किरातार्जुनीयम् महाकाव्य भारवि की महान् रचना है। इसे एक उत्कृष्ट श्रेणी की काव्यरचना माना जाता है। इनका काल छठी-सातवीं शताब्दि बताया जाता है। यह काव्य किरातरूपधारी शिव एवं पांडुपुत्र अर्जुन के बीच के धनुर्युद्ध तथा वाद-वार्तालाप पर केंद्रित है। महाभारत के वन पर्व पर आधारित इस महाकाव्य में अट्ठारह सर्ग हैं। भारवि सम्भवतः दक्षिण भारत के कहीं जन्मे थे। उनका रचनाकाल पश्चिमी गंग राजवंश के राजा दुर्विनीत तथा पल्लव राजवंश के राजा सिंहविष्णु के शासनकाल के समय का है।

1:12 pm

कवि ने बड़े से बड़े अर्थ को थोड़े से शब्दों में प्रकट कर अपनी काव्य-कुशलता का परिचय दिया है। कोमल भावों का प्रदर्शन भी कुशलतापूर्वक किया गया है। इसकी भाषा उदात्त एवं हृदय भावों को प्रकट करने वाली है। प्रकृति के दृश्यों का वर्णन भी अत्यन्त मनोहारी है। भारवि ने केवल एक अक्षर 'न' वाला श्लोक लिखकर अपनी काव्य चातुरी का परिचय दिया है।

1:31 pm

प्रश्न ६ – भारविकृत किरातार्जुनीय महाकाव्य का काव्यशैली की दृष्टि से समीक्षात्मक विवेचन कीजिये।

उत्तर—महाकाव्य की दृष्टि से विचार करने पर यह काव्य शास्त्रीय नियमों पर लिखा हुआ सफल महाकाव्य सिद्ध होता है। महाकाव्य की रचना अनेक सर्गों में की जाती है इसमें अठारह सर्ग हैं इसकी कथा इतिहास प्रसिद्ध महाभारत की कथा है, काव्य का नायक अर्जुन है। इस महाकाव्य में जल विहार,

PDF किरातार्जुनीयम् की काव्यशैली.pdf

5 pages • PDF 1:45 pm

Type a message

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि भारवि ने काव्य में कला और भाव पक्ष दोनों का ही महत्त्व स्वीकार करते हुये अपने महाकाव्य की रचना की है। भारवि का मत है कि काव्य में शब्द और अर्थ दोनों का ही महत्त्व है, जो बात कही जाय वह निश्चित अर्थ वाली तथा प्रमाणों से युक्त होनी चाहिये। काव्य में जो वाणी कही जावे उसका अर्थ स्पष्ट होना चाहिये और अर्थगौरव भी अपेक्षित होता है। परन्तु पुनरुक्ति नहीं होनी चाहिये। अतः भारवि की काव्यशैली वैदर्भी रीति प्रधान, अर्थगाम्भीर्य युक्त, शब्दों की समुचित योजना से सुसज्जित प्राञ्जल एवं परिष्कृत है। जिसका परवर्ती कवियों ने अनुकरण किया है।

है कि उसके बाद शरच्चन्द्र के समान आनन्ददायक कान्ति-समूह से प्रदीप्त श्यामवर्ण शरीर पर पीतवर्ण की जटा धारण करने के कारण बिजली युक्त मेघ के समान समस्त आनन्ददायक साधनों से युक्त अपने असाधारण सौन्दर्य से अपरिचित लोगों के हृदय में अपने व्यक्तित्व के उच्चभाव को उत्पन्न करने वाले, अपने शान्त स्वभाव से हृदय की स्वच्छ एवं पवित्र भावनाओं को प्रकट करते हुए, भगवान् वेदव्यास अपने अत्यन्त सौम्य, सहज, मधुर, तथा विश्वसनीय परिचय से ही अपरिचित लोगों के मन में भी ऐसे भाव उत्पन्न करते थे मानों वे उनके साथ इससे पहले ही घुलमिल चुके हों।

किरातार्जुनीय में भारवि ने शब्दों की सामर्थ्य के साथ वाच्यार्थ और अर्थगाम्भीर्य का प्रशंसनीय समावेश किया है। भारवि कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थों की अभिव्यञ्जना करने में समर्थ कवि हैं। दुर्योधन के अपमान से व्यथित द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि—

गुणानुरक्तामनुरक्तसाधनः कुलाभिमानी कुलजां नराधिपः।
परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेन्मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम्॥

अर्थात् हे राजन्! (युधिष्ठिर) आपको छोड़कर ऐसा कौन कुलाभिमानी राजा होगा जो गुणों से प्रेम करने वाली, उच्च कुलोत्पन्न सुन्दर अपनी कुल-वधू के समान राजलक्ष्मी का स्वयं शत्रुओं से अपहरण करा दे।

यद्यपि भारवि को संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में कलापक्ष का प्रारम्भ करने वाला प्रथम कवि माना जाता है तथापि उनका काव्य शब्दाडम्बरहीन, दीर्घ-काय समासयुक्त पदावली से अनाक्रान्त है, उनका काव्य वीररस प्रधान है। अतः उसके अनुकूल शब्द-योजना की गई है। द्रौपदी के ओजस्वी वचनों को निम्न प्रकार वैदर्भी रीति के अनुकूल देखिए—

पुरःसरा धामवतां यशोधनाः सुदुःसहं प्राप्य निकारमीदृशम्।
भवादृशाश्चेदधिकुर्वते रतिं निराश्रयः हन्त हता मनस्विता॥

इसके अतिरिक्त जहाँ भारवि ने शृङ्गार रस की अभिव्यक्ति की है और प्रकृति का आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया है वहाँ निःसन्देह भारवि ने कालिदास के समान माधुर्य व्यञ्जक वर्णों की मनोहर योजना भी की है उदाहरणार्थ निम्न श्लोक द्रष्टव्य है—

संवाता मुहुरनिलेन नीयमाने दिव्यस्त्रीजघन वरांशुके विवृतिम्।
पर्यस्यत्पृथु मणिमेखलांशुजालं स जज्ञे युक्त कमिवान्तरायमूर्वीः॥

गम्भीर अर्थों तथा पदों से अलंकृत वाणी अथवा पत्नी अपूर्व पुण्यात्मा को ही प्राप्त हो सकती है।

इस भावना के अनुसार हम जब भारवि की काव्यकला का विवेचन करते हैं तो यह ज्ञात होता है कि भारवि ने श्रुतिकटु दीर्घकाय समासयुक्त पदावली, अप्रचलित व्याकरण और शब्दाडम्बरों को अपनी काव्यकला में आने ही नहीं दिया है। भारवि ने अपने काव्य में लोकरुचि का विशेष ध्यान रखा है।

स्तुवन्ति गुर्वीमभिधेय सम्पदं विशुद्धिमुक्तेरपरे विपश्चितः।
इति स्थितायां प्रतिपूरुषं रुचौ सुदुर्लभाः सर्वमनोहरा गिरः॥

अर्थात् कुछ लोग काव्य में अर्थगौरव की प्रशंसा करते हैं, तो कुछ लोग शाब्दिक सौन्दर्य की प्रशंसा करते हैं। अतः ऐसी रचना करना अत्यन्त कठिन है कि जिसमें अर्थगौरव और शाब्दिक सौन्दर्य दोनों का एक साथ समन्वित रूप प्राप्त होता हो। भारवि के इस दृष्टिकोण का सफल उदाहरण भीम और युधिष्ठिर के सम्वाद में निम्न श्लोक में देखा जा सकता है—

स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्।
रचिता पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्॥

युधिष्ठिर भीमसेन से कहता है कि तुम्हारी वाणी में पदों के द्वारा विशद अर्थ की विशेषता छिपी नहीं है, अर्थगाम्भीर्य कहीं भी अस्वीकृत नहीं किया जा सकता है और तुम्हारे वाक्यों तथा पदों में पूर्वापर सम्बन्ध का उचित निर्वाह प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त तुम्हारी वाणी प्रभावशालिनी है। उसमें कहीं भी शिथिलता प्राप्त नहीं होती है।

प्रस्तुत श्लोक उनकी काव्य-शैली का परिचायक है। भारवि ने अपने काव्य में सर्वत्र अर्थगाम्भीर्य युक्त एवं मनोहर भाषा का प्रयोग किया है "मनः प्रियामथ निश्चित्य गिरं गरीयसीम्' यही भारवि के अर्थ का गौरव है। भारवि की पद्य-रचना में गद्य-रचना जैसी स्वच्छन्दता एवं सरसता प्राप्त होती है। उनके वर्णनों में गद्य के समान पद्यों में शिल्पकला का मार्मिक समावेश किया गया है। तृतीय सर्ग के आरम्भिक तीन श्लोकों में भारवि ने वेदव्यास के वर्णन में जो शब्दचित्र अंकित किया है उसको पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि "कादम्बरी' के भगवान् जाबालि का वर्णन आँखों के सामने आ जाता है। भारवि ने लिखा

नेता मध्यम पाण्डवो भगवतो नारायणस्यांशज,
तस्योत्कर्षकृतेऽनुवर्ण्यचरितो दिव्यः किरातः पुनः ।
शृङ्गारादिरसोऽयमत्र विजयी वीर प्रधानो रसः,
शैलाद्यानि च वर्णितानि बहुशो दिव्यास्त्रलाभः फलम् ॥

अर्थात् किरातार्जुनीय का नायक मध्यम पाण्डव अर्जुन हैं जो भगवान् नारायण के अंशभूत नर का अवतार माने जाते हैं। किरात रूपधारी भगवान् शंकर का महत्त्व प्रदर्शित करना ही कवि का मुख्य उद्देश्य प्रतीत होता है। इस काव्य का अंगी रस वीर रस है। कवि ने यथास्थान जल-विहार, उपवन-विहार, नदी, नद, आदि का विस्तार से वर्णन करते हुये अर्जुन को दिव्यास्त्र "पाशुपत" प्राप्त करा दिया है। किरातार्जुनीय के समस्त पात्र प्रायः महाभारत के ही पात्र हैं। तथापि किरात के पात्र महाभारत की अपेक्षा अधिक सजीव तथा प्रभावोत्पादक प्रतीत होते हैं परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं ग्रहण करना चाहिए कि भारवि व्यास जी से बढ़कर श्रेष्ठ कवि हैं। व्यास जी ज्ञानराशि के भण्डार थे उन्होंने अपने नेत्रों से देखी गई घटनाओं का चित्रण महाभारत में किया है। भारवि की काव्यकला में बुद्धि प्राबल्य की मात्रा अधिक दृष्टिगोचर होती है। यही कारण है कि द्रौपदी के चरित्र में जो ओजस्विता, अर्जुन के चरित्र में जो शौर्य, युधिष्ठिर और भीम के सम्वाद में युधिष्ठिर की जो न्यायपरता और विवेक शक्ति और भीम के शरीर में जो प्रतिशोध की भावना का अपार उत्साह सागर तरंगित हो रहा है, यह सब एकमात्र भारवि की कल्पना एवं काव्यकला का सौष्ठव है। जो अन्यत्र दुर्लभ है।

पद्य-रचना सम्बन्धी भारवि की मान्यता—जिस प्रकार सुबन्धु और बाण ने गद्य-रचना को कुछ नियमों का निर्धारण किया था उसी प्रकार भारवि ने पद्य-रचना के कुछ विशेष नियमों का निर्धारण :किया है। किरातार्जुनीय के १४वें सर्ग में भारवि ने भगवान् श्रीकृष्ण के मुख से निम्न प्रकार अपने भावों को व्यक्त करते हुए लिखा है कि —

विविक्तवर्णाभरणा सुखश्रुतीः प्रसादयन्ती हृदयान्यपि द्विषाम् ।
प्रवर्तते नाकृत पुण्यकर्मणां प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती ॥

अर्थात् विविक्तवर्ण रूपी आभरणों से अलंकृत, कानों को प्रिय, अपने विरोधियों को भी आनन्दित करने वाली, स्वाभाविक प्रसाद गुण से युक्त, तथा

प्रश्न ६ – भारविकृत किरातार्जुनीय महाकाव्य का काव्यशैली की दृष्टि से समीक्षात्मक विवेचन कीजिये।

उत्तर—महाकाव्य की दृष्टि से विचार करने पर यह काव्य शास्त्रीय नियमों पर लिखा हुआ सफल महाकाव्य सिद्ध होता है। महाकाव्य की रचना अनेक सर्गों में की जाती है इसमें अठारह सर्ग हैं इसकी कथा इतिहास प्रसिद्ध महाभारत की कथा है, काव्य का नायक अर्जुन है। इस महाकाव्य में जल विहार, उपवन विहार, ऋतुओं का वर्णन, मधुपान, शृङ्गार, युद्ध एवं नायक विजय आदि का वर्णन विस्तार के साथ किया गया है। इसमें अनेक छन्दों का प्रयोग किया गया है, प्रत्येक सर्ग के अन्त में छन्द परिवर्तन किया गया है इस प्रकार काव्य शास्त्रीय नियमों से निबद्ध यह एक सफल महाकाव्य है।

भारवि की काव्यकला में संयम और मर्यादा है यद्यपि किरातार्जुनीय के सभी पात्र लोक प्रसिद्ध हैं तथापि भारवि ने कुछ ऐसे पात्रों को भी निर्दोष सिद्ध कर दिया हैं जिन्होंने मर्यादा और नैतिकता को महाभारत में अतिक्रमण कर दिया था।

भारवि का एकमात्र उद्देश्य शत्रु प्रतिशोध है इसीलिये किरातार्जुनीय वीररस महाकाव्य की रचना की है। किरातार्जुनीय में चित्रित पात्रों का परिचय मल्लिनाथ ने एक ही श्लोक में निम्न प्रकार वर्णन किया है—